Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPPSC - CSE

सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा

Prelims & Mains

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज

सामान्य अध्ययन

पेपर 4 – भाग 1

नीतिशास्त्र एवं सत्यनिष्ठा तथा निबंध लेखन

SIERRA INNOVATIONS

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

पेपर - 4 भाग - 1

नीतिशास्त्र एवं सत्यनिष्ठा

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**नीतिशास्त्र का परिचय - नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध** • नीतिशास्त्र की प्रमुख विशेषताये • मूल अवधारणा • सार्वजनिक जीवन में नीतिशास्त्र • स्वतंत्रता और अनुशासन • नीति -शास्त्र के निर्धारक तत्त्व • कर्तव्य और अधिकार • नीतिशास्त्र का सार तत्त्व • नीतिशास्त्र और नैतिकता में अंतर • नैतिकता के आयाम • प्रकार	**1**
2.	**नैतिक गुण - मानवीय मूल्य** • मूल्य व नैतिकता • मूल्य का आशय एवं प्रासंगिकता • मूल्यों को विकसित करने में परिवार की भूमिका • मूल्यों को विकसित करने में शेक्षणिक संस्थानों की भूमिका • मूल्यों को विकसित करने में समाज की भूमिका • महान व्यक्तियों के जीवन के मूल्य • भारतीय परंपरा में मूल्यों का योगदान	**8**
3.	**भारत और विश्व के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान** • भारतीय दर्शन (इंडियन स्कूल ऑफ फिलॉसफी) • भारतीय विचारक • पश्चिम के दर्शिनको के प्रमुख विचार	**13**
4.	**नीतिशास्त्र और उसके बहुआयामी स्वरूप** • कारोबारी नैतिकता • व्यावसायिक नैतिकता • चिकित्सीय नैतिकता • कॉर्पोरेट नैतिकता से संबंधित मुख्य क्षेत्र • हित संघर्ष व नीतिशास्त्र का संबंध • कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व • हिंसा या अहिंसा के बीच का नैतिक द्वंद • विवाह-निजी विषय या समाज द्वारा निर्देशित • मृत्यु दण्ड-समाज के लिए संदेश या जीवन के अधिकार का उल्लंघन • नैतिकता के सारतत्त्व और व्यावहारिक जीवन	**24**

5.	**मनोवृत्ति/ अभिवृत्ति** • मनोवृत्ति और मानव व्यवहार • प्रबोधक • पूर्वाग्रह का अर्थ • रूढ़ियुक्ति (stereotypes)	**28**
6.	**अभिक्षमता (Aptitude)** • अभिक्षमता (Aptitude) की पांच प्रमुख विशेषताएं • बुनियादी मूल्य क्या है? • सत्यनिष्ठा • सच्चरित्रता • समानुभूति • सहानुभूति (Sympathy) • दयालुता (Kindness) • सहिष्णुता • संवेदना • निष्पक्षता • वस्तुनिष्ठता (objectivity)	**36**
7.	**भावनात्मक समझ (EI)** • भावनात्मक प्रज्ञता • भावनात्मक प्रबंधन • योग्यता प्रतिदर्श • अंतरात्मा के प्रकार • अवधारणा	**49**
8.	**प्रशासन में नीतिशास्त्र** • आचार संहिता और आचरण संहिता में अंतर • नीति संहिता • भागीदारी आधारित शासन (सरकार, निजी क्षेत्र ,नागरिक समाज)	**53**
9.	**शासन व्यवस्था में ईमानदारी** • नैतिकता और राजनीति • सिटिजन चार्टर • मीडिया की भूमिका • सामाजिक लेखा-जोखा • सिविल सेवाओं में सुधार करना • सिविल समाज	**56**
10.	**नैतिक तर्क** • नैतिक तर्क का अर्थ • नैतिक तर्क की प्रक्रिया • नैतिक तर्क के कार्य या भूमिका • नैतिक तर्क और कानून	**65**
10.	**प्रमुख केस स्टडी**	**66**

निबंध लेखन

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**एक अच्छा निबंध कैसे लिखें एक अवलोकन** • निबंध क्या है? • एक निबंध को क्या नहीं होना चाहिए.... • एक अच्छे निबंध के अवयव	**73**
2.	**UPSC मुख्य परीक्षा निबंध के विशिष्ट पहलू** • निबंध पेपर पैटर्न • UPSC - निबंध के पेपर में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें? • निबंध लेखन का दृष्टिकोण • विषय चुनने का आधार • निबंध से क्या अपेक्षा की जाती है? • निबंध के विषय का संदर्भ • दार्शनिक निबंध कैसे लिखें	**75**
3.	**महिला सशक्तिकरण**	**80**
4.	**भारत में शिक्षा**	**84**
5.	**भारत में स्वास्थ्य सेवा**	**89**
6.	**वैश्वीकरण, इसके निहितार्थ और हाल के रुझान**	**93**
7.	**जलवायु परिवर्तन**	**96**
8.	**रक्षा उद्योग का स्वदेशीकरण आयातक से निर्यातक तक** • परिशिष्ट • उद्धरणों का संग्रह • व्यक्तिगत रूप से उद्धरणों का संग्रह	**100**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

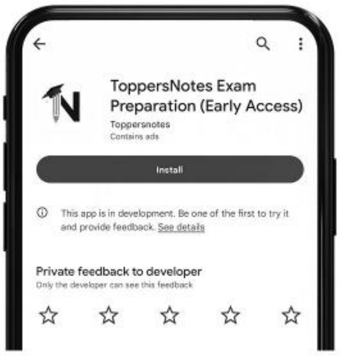

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

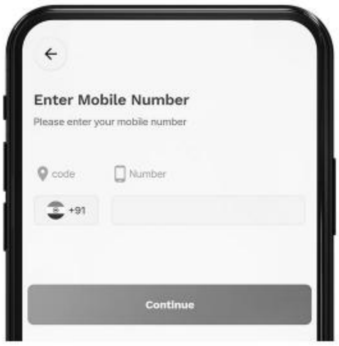

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

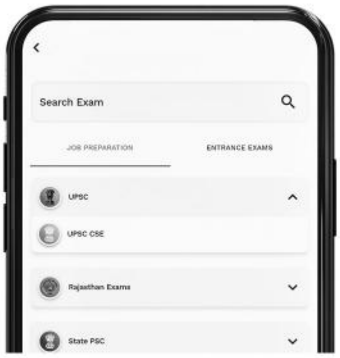

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

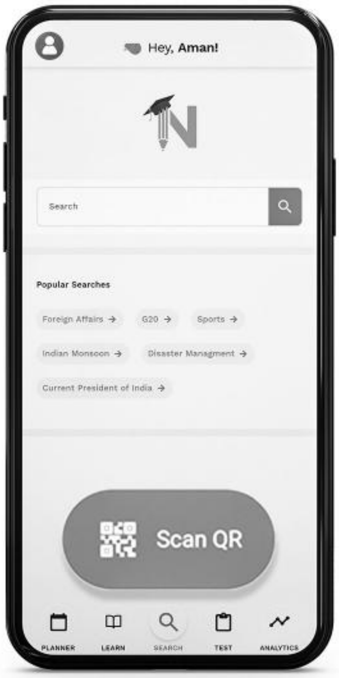

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

Thank You!!

for Choosing Toppersnotes

50% OFF

USE CODE : **TOPPER50**

Coupon valid only for 30 days after purchase.

Just for you!!

Scan the QR code and login from your registered phone number

UPPCS TEST SERIES

~~₹1499~~ ~~₹999~~ ₹499 *(After coupon)*

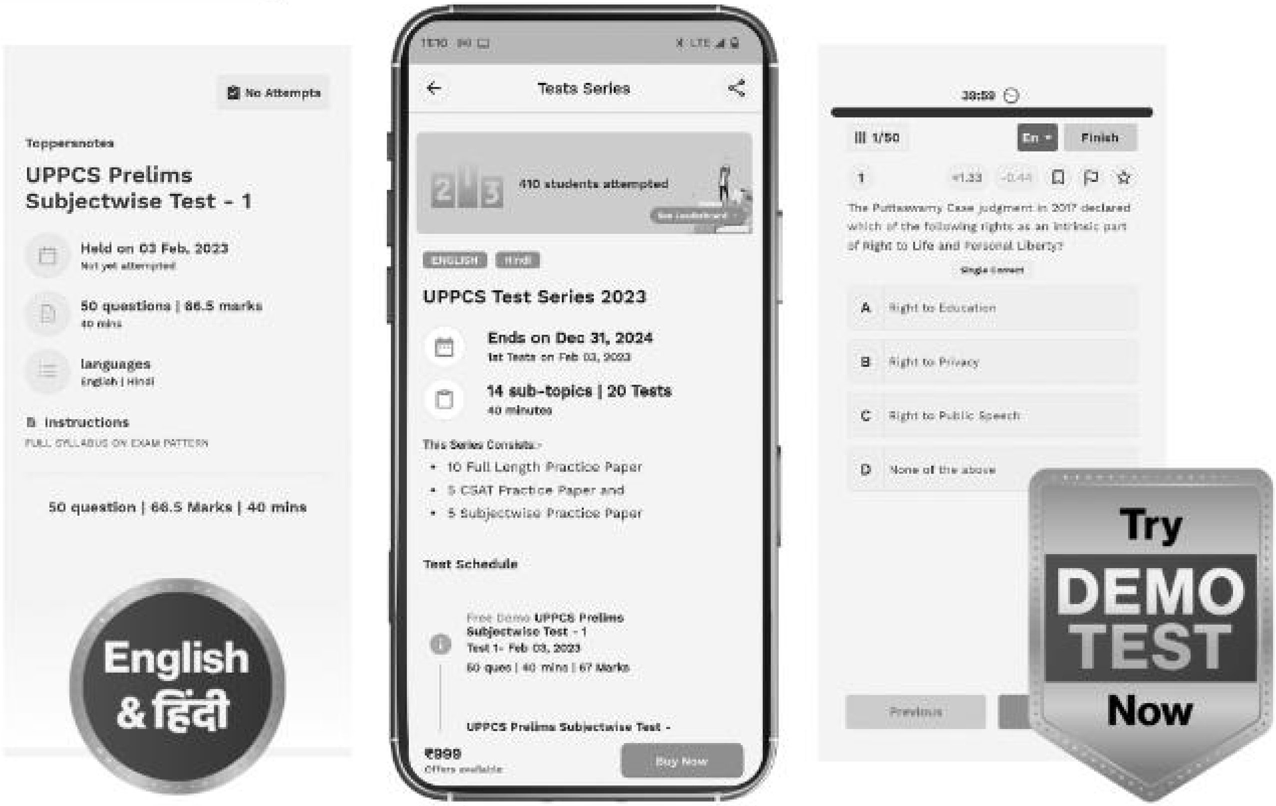

- 5 Subject-wise Test
- 10 Full Length Test
- 5 CSAT Test
- Based on Latest sylabus.
- Up Centric question according to new pattern
- Bilingual
- Comprehensive coverage
- High-quality questions
- Detailed explanations
- Performance analysis
- Flexibility - At your own pace
- Peer comparison on leader board
- Affordable pricing
- Designed by Toppers and top faculty.

How to use the Coupon Code?

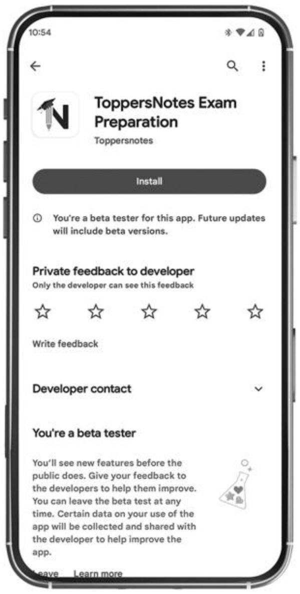

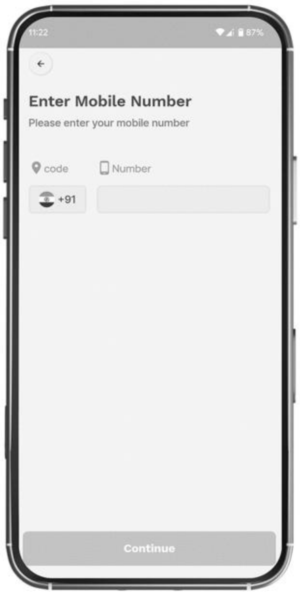

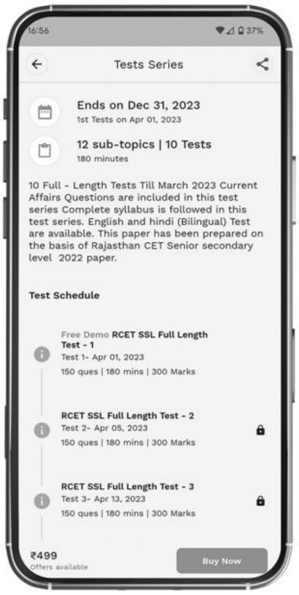

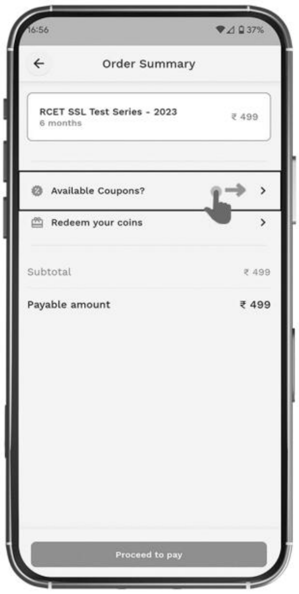

STEP:1 Scan the QR code from the back page and install the Toppersnotes learning app.

STEP:2 login with your registered phone number and select your exam.

STEP:3 On the test series page you can try demo test or Click on buy now

STEP:4 Click on apply coupon

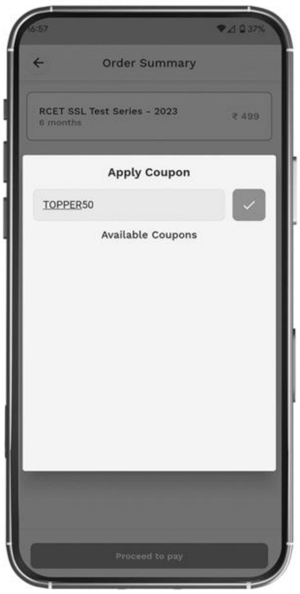

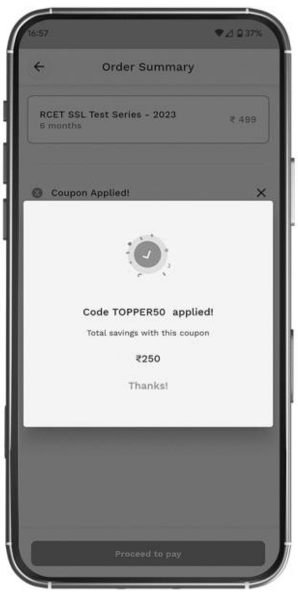

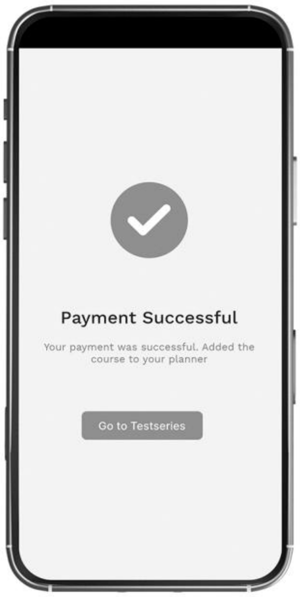

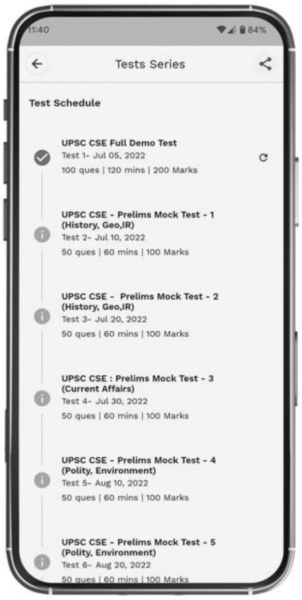

STEP:5 Enter the coupon code.

STEP:6 Your code will be applied and then proceed with the payment.

STEP:7 After successful payment click on go to test series

STEP:8 Your test series subscription is active now

For any technical support or queries call
9614-828-828

Email
apps@toppersnotes.com

1 CHAPTER

नीतिशास्त्र का परिचय - नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध

- नीतिशास्त्र एक नैतिक दर्शन है।
- यह मानवीय आचरण का वैज्ञानिक दर्शन प्रस्तुत करता है।
- यह दर्शनशास्त्र की उस शाखा का प्रतिनिधित्व करती है, जो व्यक्ति के द्वारा किये गये कार्यों के नैतिक या अनैतिक अथवा सही या गलत को बतलाती है।
- यह वास्तव में दर्शनशास्त्र के मूल्यमीमांसा (Axiology) शाखा से संबंधित है, जो नैतिक (Ethics) एवं सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics) की विवेचना करता है।
- नीतिशास्त्र के संबंध में सबसे बड़ी समस्या है कि विद्वानों के मध्य मतैक्य भिन्नता की स्थिति है।
- कुछ विद्वान इसे विज्ञान की शाखा में निरूपित करते है जबकि कुछ विद्वानों ने इसे कला के रूप में संदर्भित किया है।

नीतिशास्त्र की प्रमुख विशेषताये

1. **नैतिकता (Ethics) -** रीति, प्रचलन या आदत है जबकि नीतिशास्त्र, नीति , प्रचलन या आदत का व्यवस्थित अध्ययन है
2. नीतिशास्त्र एक ऐसा आदर्शवादी विज्ञान है,जो मानव आचरण का मूल्यांकन करता है।
3. आचरण के अंतर्गत मनुष्य की केवल ऐच्छिक क्रियाएँ आती है। उन्ही क्रियाओं को ऐच्छिक कहा जाता है ,जिसके करने में व्यक्ति अपने संकल्प से काम लेता है।
4. नीतिशास्त्र वह आदर्श मूलक और मानकीय विज्ञान है ,जो सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य के ऐच्छिक और आचरण सम्बंधी कर्मों का विश्लेषण कर उनके संबंध में उचित , अनुचित अथवा शुभ - अशुभ का मानदण्ड प्रस्तुत करता है।
5. नैतिकता और नीतिशास्त्र के सभी मानदण्ड मनुष्य के केवल ऐच्छिक कर्मो पर ही लागू होते हैं। मनुष्य के अनऐच्छिक कर्मो का विश्लेषण नीतिशास्त्र का विषय नही है। जैसे - मनुष्य की आंतरिक और शारीरिक क्रियाये अनऐच्छिक क्रियाये होती है और नीतिशास्त्र इनके संबंध में कोई वाद अथवा मानदण्ड प्रस्तुत नही करता ।
6. इसके विपरीत विपत्ती में किसी व्यक्ति सहायता करना, किसी व्यक्ति का ऐच्छिक कर्म है, क्योकि यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह किसी व्यक्ति सहायता करे या न करे, इसलिए यह नीतिशास्त्र का विषय और नीतिशास्त्र इसके संबंध में मानदंड प्रस्तुत करता है।
7. मनुष्य द्वारा किया गया प्रत्येक फर्म था तो सही कहा जाता था गलत , परन्त प्रश्न यह है कि किसी कर्म को सही या गलत कहने के लिए हमारे पास क्या विषय ,मानक और तर्क है
8. नीतिशास्त्र हमें इन विषयों और मानकों से अवगत कराता है जिसके आधार पर हम किसी कर्म का विश्लेषण करके उसे सही या गलत कहते है।
9. इसके अतिरिक्त किसी कर्म का विश्लेषण करते समय नीतिशास्त्र केवल उपलब्ध तथ्यों को ही आधार नही बनाता बल्कि वह उन तथ्यों की प्रासगिकता पर भी विचार करता है, जिन्हे हम बोद्धिक स्तर पर स्वीकार या नकार सकते है और साथ ही इन तथ्यों के प्रभावों से उत्पन्न संभावित व्यावहारिफ परिणामों तक पहुंच सकते है।
10. नीतिशास्त्र का संबंध आचरण के औचित्य और अनोचित्य से है। इसे परखने के कुछ नियम और मानदंड होते है , जिसका निर्धारण नीतिशास्त्र के तहत ही होता है। अत', नीतिशास्त्र का लक्ष्य है जीवन के वास्तविक आदर्श, आचरण के नियम तया मानदण्डों फो स्थापित करना।
11. नीतिशास्त्र लोक प्रशासन का अनिवार्य अंग है। यह लोक प्रशासन के अंतर्गत इन मानदंडों को प्रस्तुत करता है जिसका अनुसरण कर लोक प्रशासन प्रभावी और कुशल प्रशासन के साथ-साथ उतरदायी रुप से जबाबदेयता सुनिश्चित करने वाला सुशासन उपलब्ध कराए।
12. नीतिशास्त्र या आचार संहिता समानार्थी है। उदाहणार्थ नैतिक आचरण का अर्थ नियमबद्ध आचरण से ही है। नीतिशास्त्र को नैतिकता का विज्ञान भी कहा जाता है और व्यक्ति भी इसी नैतिकता के सिद्धांतानुसार व्यवहार करता है।

मूल अवधारणा

नैतिकता और मूल्य

नैतिकता	मूल्य
• किसी व्यक्ति द्वारा धारण किए गए **सही और गलत के सिद्धांत।** • किसी व्यक्ति से संबंधित व्यवहार के मानक न कि **सामाजिक आचरण।** • व्यक्तिगत **अनुभव**, **चरित्र**, **विवेक** आदि से उत्पन्न होता है। • **उदाहरण**: समलैंगिकता एक व्यक्ति के लिए नैतिक हो सकती है लेकिन समाज के परिप्रेक्ष्य में अनैतिक है।	• **गुण** हमारे लिए **महत्वपूर्ण** हैं। • किसी **कार्रवाई** की **वांछनीयता** को **मापने** के लिए **मानक।** • एक **आंतरिक कंपास** के रूप में कार्य करता है जो एक व्यक्ति को **आचरण** और **व्यवहार** के विभिन्न विकल्पों का **मूल्यांकन** करने में **सहायता** करता है। • **उदाहरण**: ईमानदारी, अखंडता, सहानुभूति, साहस, समर्पण, करुणा आदि।

विश्वास

- यह एक व्यक्ति के व्यवहार घटकों की व्याख्या करता है।
- यह एक आंतरिक भावना है कि आपकी मान्यता सच है, भले ही वह विश्वास अप्रमाणित और तर्कहीन हो।
- उदा. गांधीजी का मानना था कि असहयोग आंदोलन शुरू करने के एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त किया जा सकता है।
- यह परिधीय (कमजोर) और मूल (मजबूत) हो सकता है।
- प्रत्यक्ष बातचीत से बनने वाले विश्वास आम तौर पर मजबूत होते हैं।
- इसे संज्ञान के रूप में भी जाना जाता है।

सार्वजनिक जीवन में नीतिशास्त्र

- लोकतंत्र में सभी सार्वजनिक पदाधिकारी जनता के ट्रस्टी होते हैं।
- जनता और अधिकारियों के बीच संबंध के लिए आवश्यक है कि अधिकारियों को सौंपे गए अधिकार का प्रयोग 'जनहित' में किया जाए।
- यूनाइटेड किंगडम में सार्वजनिक जीवन में मानकों पर समिति/नोलन समिति ने सार्वजनिक जीवन के निम्नलिखित सात सिद्धांतों (OHIOSAL) को रेखांकित किया।
    - वस्तुनिष्ठता
    - ईमानदारी
    - अखंडता
    - उदारता
    - निःस्वार्थता
    - जवाबदेही
    - नेतृत्व

स्वतंत्रता और अनुशासन

- स्वतंत्रता मूल मानवीय मूल्य है अर्थात:
    - प्राणी स्वतंत्र रहना चाहते है। वे बंधन और प्रतिबंधों को नापसंद करते हैं।
    - कहावत है - आदमी स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन हर जगह वह जंजीरों में जकड़ा होता है।

स्वतंत्रता के विभिन्न दृष्टिकोण

व्यक्तिगत स्वतंत्रत	• आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है।
बौद्धिक स्वतंत्रता	• मन की स्वतंत्रता, ज्ञान, पुराने विचारों पर सवाल उठाने और नए बनाने की स्वतंत्रता, अकल्पनीय सोच की स्वतंत्रता, अगम्य तक पहुँचने की स्वतंत्रता।
इच्छा-स्वातंत्र्य	• विकल्पों के बीच चयन करने की स्वतंत्रता को दर्शाता है • यथास्थिति पर सवाल उठाने के लिए जरूरी

नीति -शास्त्र के निर्धारक तत्त्व

आंतरिक करक

1) सामाजीकरण

- यह एसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति को सीखता है
- परिवार के द्वारा किसी व्यक्ति प्राथमिक सामाजीकरण व शिक्षा , संस्थाओं व अन्य संचार के माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी संस्कृति, परंपराओ व प्रथाओ को जानता व समझाता है।
- वास्तविक अर्थों में रीति रिवाज को सांस्कृतिक कारक बहुत दूर तक प्रभावित करते है। कुछ स्थितियों में जरूरतमंद लोगों के लिए सहायता का प्रचलन देखने को मिलता है।

2) मनोवैज्ञानिक

- यह व्यक्तित्व का गुण है। जैसे - जिन लोगों में कर्तव्यपरायणता अधिक होती है उनके नैतिक होने की सम्भावना अधिक होती है, कुछ व्यक्तियों में स्वाभाविक रुप से दूसरों की सेवा करने का गुण पाया जाता है।जैसे - मदर टेरेसा, बाबा आम्टे आदि ।

3) धार्मिक

- विश्व के सभी में धर्मो में कुछ न कुछ नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर बल दिया जाता है।

4) **ऐच्छिक कर्म**

- अपनी इच्छानुसार कर्म करने या न करने की स्वतंत्रता को ही संकल्प की स्वतंत्रता कहते है । किसी व्यक्ति को अच्छा-बुरा भी तभी कहा जा सकता है जब उसके पास ऐसी स्वतंत्रता उपलब्ध हो ,जैसे
- किसी सिविल सेवक को जीवन रक्षा में अनैतिक कार्य करने पड़े तो वास्तविक अर्थ में यह अनैतिक के समकक्ष नही है क्योकि ऐसा किसी व्यक्ति ने अपनी जीवन रक्षा के उद्देश्य से किया है।

बाहरी करक

विधायी ढांचा

- कई राष्ट्रों में सार्वजनिक जीवन में उचित व नैतिक मुल्यों का संविधान में उल्लेख है।
- जैसे USA में 50 राज्यों में से कुल 47 राज्यों में लिखित रुप से नैतिक आचार संहिता को अपनाया है।
- भारतीय परिस्थितियों में लोक सेवा विधेयक (2006) कानून बनने के रस्ते में है । इसमें सिविल सेवकों के लिए नैतिक मूल्यों को दर्शाया गया है।

संस्थागत ढांचा

- नैतिकता को निर्धारित करने में संस्थागत घटक जैसे आयोग, कार्यालय आदि की बड़ी भूमिका दिखाई देती है।
- द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग का चौथा प्रतिवेदन शासन व्यवस्था की नैतिकता से संबंधित है।
- अमेरिका के 36 राज्यों में बने एथिक्स कमीशनों के प्रतिवेदनों के माध्यम से काफी हद तक नैतिकता का विकास हुआ है।

न्यायपालिका

- न्यायपालिका स्वयं नैतिक मानदण्डों को विकसित करती है। जैसे – आरुषी हत्याकाण्ड में न्यायपालिका ने माता-पिता को दंड देकर यह मानक स्थापित किया कि स्वयं माँ -बाप भी जान लेने वाले हो सकते।

लोक प्रचार / संचार

- इसके अनेक माध्यम है और वर्तमान समय में ई –गवर्नेंस आदि माध्यम से सभी प्रकार के नियमो आदि को प्रचारित किया जाता है

नोकरशाही का विकेन्द्रीकरण

- विकेंद्रीकरण एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा शासन, प्रशासन के अंतिम पायदान तक सभी प्रकार नैतिक नियमो आदि को पहुचाया जा सकता है

कर्तव्य और अधिकार

कर्तव्य की अवधारणा

- नागरिकों के रूप में, कर्तव्यों की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है जो हमें रोजमर्रा की जिंदगी में जोडती है।
- ये कर्तव्य राज्य और व्यक्तियों के लिए देय हैं।
- करों का भुगतान करना, साथी-नागरिकों के खिलाफ हिंसा करने से बचना और संसद द्वारा बनाए गए अन्य कानूनों का पालन करना एक कानूनी कर्तव्य है।
- इन कानूनी कर्तव्यों के उल्लंघन से वित्तीय परिणाम (जुर्माना), या कारावास जैसे दंडात्मक उपाय होते हैं।
- कर्तव्य एक सरल तर्क का पालन करते हैं कि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए कुछ हद तक आत्म-बलिदान की आवश्यकता होती है, और इसे प्रतिबंधों द्वारा लागू किया जाना चाहिए।

अधिकार की अवधारणा

- भारत में, यह संविधान में मौलिक अधिकारों पर एक अध्याय में परिलक्षित हो सकता है।
- अमानवीयकरण के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में अधिकार:
  - मौलिक अधिकारों पर विचार-विमर्श करते हुए भारतीय संविधान के निर्माताओं का विचार था कि प्रत्येक मनुष्य की बुनियादी गरिमा और समानता तक पहुंच होनी चाहिए जिसे राज्य द्वारा नहीं छीना जा सकता है।
  - भारत में मौलिक अधिकारों की आवश्यकता औपनिवेशिक शासन के उन अनुभवों से उत्पन्न हुई जहाँ भारतीयों के साथ प्रजा के जैसा व्यवहार किया जाता था।
    - उदाहरण के लिए, औपनिवेशिक सरकार ने लोगों के कुछ समूह को आपराधिक जनजाति के रूप में घोषित किया, जिनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था।

नीतिशास्त्र का सार तत्त्व

मानवीय क्रिया कलाप का सार तत्त्व दो शब्दों के इर्द-गिर्द देखा जा सकता है

- परहित
- सार्वभोमिकता
- ऐसा कोई भी ऐच्छिक कर्म जो कोई व्यक्ति समाज के सामने कही भी कर सफता है। ऐसे आचरणों या व्यवहारों को नैतिक माना जा सकता है। साथ ही ऐसा स्वेक्छिक कर्म जिसमें स्वयं के हित का पहलू अन्तर्निहित न हों और तर्क पूर्व औचित्यो के माध्यम से उसे सही ठहराया गया हो। ऐसे आचरण व्यवहार को ही नैतिक व्यवहार कहा जा सकता है।
- इस तरह नैतिकता इन्ही दो वस्तुओं के इर्द -गिर्द देखने को मिलती है

- नीतिशास्त्र में प्रत्येक चरण में तर्क फा भाव समाहित होते हैं। जैसे - कानून का सारतत्व आज्ञापालन होता है,धर्म का सारतत्त्व आस्था होता है,विज्ञान का सारतत्व तर्क होता है। ठीक उसी प्रफार नीतिशास्त्र का सारतत्व उचित कर्त्तव्य होता है। नीतिशास्त्र का सारतत्व जनमानस के हित से जुड़ा होता है।

नीतिशास्त्र के सारतत्व में कई सिद्धांतो को सम्मिलित किया जाता है।

- तर्कवाद
- व्यापकता-व्यापक स्तर के कार्यो का संपादन
- सार्व भोमिकता
- उपयोगिता
- व्यक्तित्व

नीतिशास्त्र और नैतिकता

- Moral's शब्द की उत्पत्ति लैटिन के रीति-रिवाज' से है। मरीयम वेबस्टर (Marriam Webster) डिक्सनरी में नैतिकता शब्द को सही व गलत व्यवहार के विश्वास के रूप में दर्शाया गया है। नीतिशास्त्र में दार्शनिक नियमों के समुच्चय को रखा गया है, वहीं नैतिकता विश्वास की वह नियमावली है जिसे समाज व धर्म द्वारा निर्देशित किया जाता है।

नीतिशास्त्र और नैतिकता में अंतर

नीतिशास्त्र	नैतिकता
• मानवीय कार्यो के एक विशेष समूह या वर्ग या संस्कृति के संबंध में आचरण/व्यवहार के लिए यह ग्रीक शब्द Ethos' से लिया गया है जिसका अर्थ-चरित्र। • नीति शास्त्र एक वाह्य-सामाजिक प्रणाली है यह सामाजिक व्यवस्था (Social System) से आया है व External (वाह्य) है। इसमें नैतिक आचरण के सिद्धांत होते है, बौद्धिक प्रयास होते है। • नियमों और निश्चित guideline के तहत परिभाषित होती है और विशेष देश और काल के संदर्भ में निर्देशित होता है। • यह विशेष मानवीय क्रियाओं या विशेष समूह के संदर्भ में समन्वित conducts है। क्योंकि समाज कहता है कि यह उचित है। • इसे करो (ज्यादा लचीला) (more flexible) होता है, यह अपनी व्याख्या के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है और एक निश्चित दायरे में साम्यता रखता है किन्तु विभिन्न संदर्भो में यह परिवर्तित हो सकता है। • यह आवश्यक नहीं है कि हम एथिक्स का पालन करते समय नैतिकता को बनाए अर्थात् हम बिना नैतिकता के भी Ethical हो सकते हैं।	• आचरण से संबंधित सही या गलत का सिद्धांत होता है । यद्यपि नैतिक मूल्य भी करणीय (Duos) और अकरणीय (Donts) को निर्देशित करते हैं। अंततः यह मानवीय आचरण के सही और गलत के व्यक्तिगत या निजी निर्धारक है। यह लैटिन शब्द (More) से लिया गया है जिसका अर्थ रिवाज (Custom) है। • जबकि नैतिकता, आंतरिक एवं व्यक्तिगत होती है, यह आंतरिक (enternal) एवं व्यक्तिगत होती है, इसमें मनको का समूह होता है अवम यह व्यवहार को परिभाषित करती है। • यह सामान्य सांस्कृतिक मानकों को आधार बनाती है और इसकी ग्रहणशीलता व्यापक होती है। यह सिद्धांत या वह आदत व्यवहार जो सिखाती है कि क्या अच्छा है या क्या बुरा। • क्योंकि हम इसमें विश्वास करते हैं कि क्या उचित है और क्या अनुचित (कम लचीला) (Less flexible) होती है। • कभी-कभी नैतिकता का पक्ष रखने के लिए एथिक्स की अवहेलना भी की जा सकती है।

नैतिकता के आयाम
भारतीय परिपेक्ष्य में

- आश्रम धर्म
- वर्ण धर्म
- सामान्य धर्म

पाश्चात्य परिपेक्ष्य में

- मानकीय नीति शास्त्र
- निर्देशानात्मक नीतिशास्त्र
- विवरणात्मक
- मेटा एथिक्स
- प्रयोगात्मक नीति शास्त्र

प्रकार

मानकीय नीतिशास्त्र

- इसमे आचरण को आदर्श बताया जाता है।अर्थात मानव - आचरण कैसा होना चाहिए | इस तथ्य की विवेचना की जाती है।

- वास्तव में यह उस कसौटी की खोज है जो किसी व्यवहार के औचित्य का परीक्षण करता है।
- मानकीय नीतिशास्त्र कुछ मानकों पर आधारित नैतिक सिद्धांतों की भी रचना करता है अर्थात कुछ ऐसे नैतिक सिद्धांतो का प्रतिपादन करता है जो कठिन परिस्थितियों में भी नतिक निर्णय लेने में सहायक होते है।
- कौन सा पदार्थ अच्छा है और कौन सा खराब? कौन सा कार्य सही है और कौन सा गलत? इसके तहत एक आचार संहिता तैयार कर दी जाती है और उन्हीं तय आचार या नियम के अनुसार- कार्य निर्धारण किया जाता है। इसका वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है

1. **परिणामवाद**
    - किसी भी कार्य की नैतिकता या अनैतिकता का आधार उस क्रिया का परिणाम होगा। नैतिक दृष्टि से उचित कार्य वही होगा जिसका परिणाम बेहतर होगा।

परिणामवाद के प्रकार

उपयोगितावाद (Unitarianism):

- कोई भी ऐसा कार्य जो अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख दे वह बेहतर है। सुख को बेहतर तब मानेंगे जब आनंद की अनुभूति अधिक हो और दुःख कम हो। मानव के लिए सुख ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति को ऐसे कार्य करने चाहिए जो उसके सुख को चरम पर लेकर चला जाए।

सुखवाद (Hedonism):

- **सुखवाद** (Hedonism) नीतिशास्त्र के अंतर्गत नैतिक अपेक्षाओं की अभिपुष्टि करने वाला सिद्धांत है। **सुखवाद** के अनुसार अच्छाई वह है जो आनन्द प्रदान करती है या दुःख-पीड़ा से छुटकारा दिलाती है तथा बुराई वह है जो दुःख-पीड़ा को जन्म देती है। सैद्धांतिक तौर पर **सुखवाद** नीतिशास्त्र में प्रकृतिवाद का एक रूपांतर है।

स्वार्थवाद (Egoism):

- मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद का पूरा समर्थन-व्यक्ति का संपूर्ण जीवन उसकी स्वार्थमूलक ईच्छाओं की पूर्ति के प्रयास में गुजरता है वह भौतिक
- वस्तुओं को ही नही बल्कि स्नेह प्रेम, त्याग जैसे गुणों को भी इसलिए महत्व देता है क्योंकि वे उसकी ईच्छा पूर्ति में सहायक होते हैं
- स्वार्थी होना बुरा नहीं है यह मनुष्य की प्रवृत्ति है जिस तरह कोई पत्थर आकाश में फुट नहीं सकता वैसे ही कोई मनुष्य परोपकारी नहीं होसकता है।

अध्यात्मवाद (Asceticism):

- स्वार्थवाद का विलोम/यह ऐसा जीवन है जहाँ स्वार्थ का कोई स्थान नहीं होता और व्यक्ति आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना उत्थान करता है।

परोपकारवाद (Alteruism):

- यहाँ व्यक्ति ऐसा कार्य करता है जो अधिकांश लोगों के लिए लाभकारी होता है भले ही खुद उसका नुकसान हो जाए। उदाहरण-दूसरों के लिए जीना।

परिणाम निरपेक्ष नीति के प्रकार

प्राकृतिक अधिकार का सिद्धांत

- हॉब्स एवं लॉक के द्वारा प्रतिपादित, मानव के पास पूर्ण एवं प्राकृतिक अधिकार है। उदाहरण-मानव ने जो अधिकार प्रकृति से प्राप्त किया, कालांतर में वही मानवाधिकार हो गया।

दैवीय आदेश का सिद्धांत

- वैसा कार्य जिसे दैवीय स्वीकृति प्राप्त है, केवल वही सही है।

उद्देश्यात्मक सिद्धांत

- नैतिक नियम बाध्यकारी है, इसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। सभी को उचित नैतिक मार्ग पर चलना चाहिए। व्यक्ति का उद्देश्य ही उसके कार्य को नैतिक या अनैतिक बनाता है। कार्य के परिणाम को नैतिकता भी उद्देश्य पर निर्भर करती है।

2. **बहुलवादी परिणाम निरपेक्ष नीति**
    - W.D रॉस के द्वारा प्रतिपादित आधारभूत दायित्व निम्न हैं
    - उपकार (Beneficences): दूसरों की मदद करना ताकि उसको लाभ हो।
    - गैर हानिकारकता (Non-Maleicences): लोगों का नुकसान करने से परहेज करना चाहिए।
    - न्याय (Justice): लोगों को अपनी योग्यता के अनुसार फल प्राप्त हो।
    - क्षतिपूर्ति (Reparation): अगर आपने किसी का नुकसान किया है तो उसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिए
3. **गुण-नैतिकता**
    - यहां सीधे-सीधे किसी नैतिक सिद्धांत का सहारा नहीं लिया जाता है। किसी भी नैतिक कार्य के लिए यहां चरित्र की भूमिका तय कर दी गई है। कालांतर में मानव चरित्र विभिन्न प्राकृतिक आधारों और विभिन्न कारकों यथा परिवार, संस्कृति, शिक्षा आदि द्वारा नियंत्रित होता है।
    - परिणामस्वरूप कुछ लोग अन्य की तुलना में ज्यादा गुणवान होते हैं। वो लोग जो ज्यादा गुणवान होते है अपने गुणों का व्यवहार कर सुख उत्पन्न करते है और जीवन को अच्छा बनाते हैं। नैतिक कृत्यों को निम्न आधारों पर जांचा जा सकता है।
    - कृत्य निश्चित रूप से अच्छाई का प्रोत्साहक हो। उदाहरण-अच्छा जीवन, व्यक्तिगत सुख सामुदायिक हित इत्यादि।

विवरणात्मक नीतिशास्त्र Descriptive ethics

- वह शाखा जो नैतिकता के सम्बन्ध में प्रचलित विश्वासों का अध्यन करती है।
- यह विभिन्न समुदाय में रहने वाले लोगों के जीवन का एक सामान्य प्रतिदर्श / प्रतिमान प्रस्तुत करता है।

- इसके अंतर्गत नीतिशास्त्र के उद्भव और विकास का अध्ययन किया जाता है जिसके फलस्वरूप हमें कुछ परम्पराओं, रूढ़ियो तथा निषेधो का विवरण प्राप्त होता है।
- जैसे - परिवार या विवाह जैसी संस्थाओं के उदभव और विकास की जानकारी वर्णनात्मक नीतिशास्त्र के अध्ययन से ही मिलती है।
- वर्णनात्मक नीतिशास्त्र नैतिक निर्णयों का विलय का विश्लेषण भी करता है।
- साथ ही इस बात की पुष्टि करता है कि विभिन्न मानव समूहों द्वारा तय किये गए नैतिक प्रतिमान कोन कोन से है। वस्तुत वर्णनात्मक नीतिशास्त्र नैतिक प्रतिमानों के अध्ययन का एक स्वतंत्र उपागम है।

व्यावहारिक/अनुप्रयोगात्मक नीतिशास्त्र

- सभी नैतिक सिद्धांतों का व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग का अध्ययन ही व्यावहारिक नैतिकता है। उदाहरणः गर्भपात, पशुओं पर परीक्षण इत्यादि।
- इसके अंतर्गत कुछ विशिष्ट बिंदु , नैतिक रूप में विवादास्पद, मुद्दों जैसे गर्भपात, जानवरों के अधिकार था इच्छा मृत्यु, आदि का विश्लेषण किया जाता है।
- कोई प्रश्न व्यावहारिक नीतिशास्त्र की विषय वस्तु है अथवा नही , यह दो बातों पर निर्भर करता है।

(1) प्रश्न विवादास्पद, -हो, साथ ही इसके पक्ष और विपक्ष में तर्क देने वाले मानव समूहों की तादाद भी वही हो ।

(2) प्रश्न किसी सामाजिक विवाद का विषय न हो बल्कि नैतिक धन से भी विवादास्पद हो ।

अधि नीतिशास्त्र (Meta ethices)

- यह अपने आप में समसामयिक आधुनिक विचार धारकों का समूह है जिसमें किसी व्यक्ति फो कैसा नैतिक आचरण करना चाहिए के विश्लेषण करने की वजाय मोरालिटी अपने आप में क्या है।
- अधि नीतिशास्त्र इस बात को देखा जाता है कि नीतिशास्त्र से जुड़े परिभाषिक शब्दों एवं मान्यताओं के वास्तविक आभिप्राय क्या है, अर्थात ये "क्या इंगित करते है"।
- जहां आदर्शात्मक नीतिशास्त्र के अंतर्गत अचरण के आदर्श व नियम बताए जाते है, पही अधि नीतिशास्त्र के अंतर्गत इन आदर्शो व नियमो की वैधता सुनिश्चित की जाती है।
- इसके अलावा यह नैतिक विशेषताओं व मूल्यांकनों की प्रकृति एवं स्वरुप निर्धारित करने का भी प्रयास करता है।

वास्तव में यह अधिनीति शास्त्र निम्न तीन से संबंधित हैं

1. **शब्दार्थ (Semantics):** इसके अंतर्गत शब्द फ्रेज. चिन्ह इत्यादि का अध्ययन करते हैं।
2. **ज्ञान-मीमांसा** (Epistemology) इसके अंतर्गत हम लोग ज्ञान या वैसे विश्वास का अध्ययन करते हैं जिसे तर्क या ज्ञान की कसौटी पर कसा जाता है।
3. **सत्ता-मीमांसा** (Ontology): व्यक्ति के प्रकृति का अध्ययन

अधिनीतिशास्त्र को निम्न दो भागों में बांटते है- 1. नैतिक यथार्थवाद, 2 नैतिक निःयथार्थवाद

नैतिक यथार्थवाद)Moral Realism):

- इसे विकल्पवाद भी कहते है। यहां नैतिक मूल्यों के वैकल्पिक आधार का अध्ययन किया जाता है। यहां कथनों का
- मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन का आधार तथ्यात्मक है। उदाहरण: सत्य एवं असत्य नामक शब्द हमारे विश्वास, भावना और अभिरूचि पर आधारित नहीं है। इन शब्दों का मूल्यांकन करना भी जरूरी है।**नैतिक यथार्थवाद के दो प्रकार हैं:**

नैतिक प्रकृतिवादः

- इसमें तथ्यात्मक नैतिक गुणों का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत संज्ञान (Cognitive) को स्वीकार किया जाता है, जिसका अर्थ है कि नैतिक वाक्यों को नैतिक कथन के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। अतः नैतिक कथन भी सत्य अथवा असत्य हो सकता है। इन नैतिक वाक्यों के अर्थ की अभिव्यक्ति प्राकृतिक विशेषता के आधार पर की जा सकती है, जहां नैतिक प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती है।

नैतिक अप्रकृतिवादः

- मूर के द्वारा प्रतिपादित। यहां नैतिक कथन ऐसे होते हैं जिसे किसी भी परिस्थिति में लघुकरण के द्वारा अनैतिक कथन में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। उदाहरण-'अच्छाई इसे किसी भी दूसरे रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। **नैतिक निःयथार्थवाद रू यहां पर वस्तुनिष्ठ मूल्य की स्थिति नहीं रहती। इसे हम एक या अनेक रूपों में देख सकते हैं। जो निम्न है**
- **नैतिक सापेक्षतावाद** कोई वस्तुनिष्ठ नैतिक विशेषता नहीं। कथन की सत्यता या असत्यता निरीक्षक की अभिवृत्ति पर निर्भर करता है या नैतिक कथन केवल एक अभिवृत्ति, राय, व्यक्तिगत वरीयता या किसी की पसंद पर निर्भर करता है।
- **नैतिक असंज्ञानात्मवाद** :नैतिक कथन अवास्तविक है। अतः यह न तो सत्य है न ही असत्य। इससे स्पष्ट होता है कि नैतिक ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं। इसके विभिन्न प्रकार नीचे दिए जा रहे हैं
- **संवेगवाद**: नैतिक कथन केवल हमारी भावना को अभिव्यक्त करता है।
- **सार्वभौमिकवादः** नैतिक कथन सार्वभौम होते है। जैसे- 'हत्या गलत है मतलब हत्या मत करो।
- **नैतिक समय:** इसमें एक से ज्यादा नैतिक ज्ञान नहीं होता है।

अधि नीति शास्त्र और मानकीय नीति शास्त्र

- मानकीय नीतिशास्त्र हमें यह बताता है कि मनुष्य के लिए स्पत : साध्य शुभ क्या है ,उसके कौन कौन से कर्म उचित है और कौन से अनुचित है। अपने प्रति और दूसरों के प्रति उसका कर्तव्य क्या है, शुभ -अशुभ तथा उचित-अनुचित अथवा कर्तव्य का निर्धारण किन नैतिक सिद्धांतों के आधार पर किया जा सकता है, आदि

अंतर

- मानकीय नीतिशास्त्र हमें यह बताता है कि हमारे लिए शुभ क्या है और हमें क्या करना चाहिए, जबकि आधिनीतिशास्त्र अमुक वस्तु हमारे लिए शुभ है तथा अमुक कर्म करना हमारा कर्तव्य है। इन नैतिक निर्णयों के अर्थ व स्वरुप का स्पष्टीकरण तथा विश्लेषण करता है।
- मानकीय नीतिशास्त्र मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए प्रतिपादित नैतिक सिद्धांतों के समर्थन में तर्क प्रस्तुत करता है, जबकि आधि-नीतिशास्त्र इन तर्कों के स्वरुप तथा इनकी विधियों पर विचार करता है और इन तर्कों की प्राथमिकता की निष्पक्ष रुप से परीक्षा फरता है|
- इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अधिनीतिशास्त्र वास्तव में मानवीय नीति-शास्त्र का पूरक है। अधि-नीतिशास्त्र उन नैतिक निर्णयों के अर्थ और स्वरुप का स्पष्टीकरण तथा विश्लेषण करता है जो हम मानकीय नीति शास्त्र के सिद्धांतो के अनुसार अपने व्यावहारिक जीवन में करते है।
- इसी प्रकार अधि-नीतिशास्त्र में उन तर्कों के स्वरूप को स्पष्ट करता है जो मानवीय नीतिशास्त्र अपने नैतिक सिधान्तो की पुष्टि के लिए प्रस्तुत करता है।
- मानकीय नीतिशास्त्र के निर्णयों तथा तर्कों के अर्थ और स्वरुप को समझने के लिए अधि नीतिशास्त्र का ज्ञान बहुत आवश्यक है। परन्तु केवल अधि-नीतिशास्त्र को ही सम्पूर्ण भौतिक दर्शन मान लेना अनुचित एवं एकांगी दृष्टिकोण है।

व्याख्यात्मक नीतिशास्त्र

- यहां नैतिकता का मूल्यांकन लोगों के व्यवहार, लोगों की नैतिकता और मूल्य के प्रति विश्वास के आधार पर किया जाता है। इसे तुलनात्मक नीतिशास्त्र भी कहा जाता है। उदाहरण-भूत और वर्तमान के नीतिशास्त्र की तुलना, एक और अन्य समाज के नीतिशास्त्र की तुलना।

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र

- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र की शुरूआत 1960 के दशक से हुई। 1990 के दशक में जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन को एक नैतिक मुद्दे के रूप में देखा गया।
- मनुष्य की अपने प्रति एवं दूसरों के प्रति जो बाध्यताएं होती है, वे बाध्यताएं एक नैतिक स्थिति की तरफ संकेत करती है, जैसे- हम सभी की दूसरों कि प्रति एक बाध्यता यह भी है कि किसी भी अन्य व्यक्ति को नुकसान न पहुंचाया जाए। किन्तु जब कोई भी मनुष्य अपने कार्यों से ज्यादा से ज्यादा कार्बन उत्सर्जन करता है तो वह दूसरों को नुकसान न पहुंचाने की बाध्यता को नकार देता है।
- इतना ही नहीं वह जाने-अनजाने अनेक ऐसे काम करता है, जिन कामों से दूसरों को परोक्ष रूप से नुकसान पहुंचता है, जैसे- ईमारती लकड़ी के लिए जंगल के कुछ पशुओं को भगाने के लिए जंगल के कुछ हिस्सों में आग लगाना, संसाधनों के लिए पृथ्वी का अंधाधुंध दोहन।
- इन कार्यों से चूंकि अन्य को नुकसान पहुंचाने की बाध्यता का खण्डन होता है, इसलिए ये मुद्दे नैतिक परिधि में आते हैं।
- जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन वैश्विक मुद्दे हैं। वैश्विक मुद्दों के समाधान के लिए राष्ट्रों और व्यक्तियों के वैश्विक उत्तरदायित्व की आवश्यकता होती है, इसलिए भी जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन नैतिक मुद्दा है।

2 CHAPTER नैतिक गुण - मानवीय मूल्य

मूल्य व नैतिकता

मूल्य मानव व्यवहार को निर्देशित करते है, जबकि नीतिशास्त्र नैतिक विश्वासों के लिए तार्किक आधार प्रदान करता है।

- मूल्य के आधार पर अच्छे व बुरे का निर्धारण होता है। लेकिन नीतिशास्त्र में केवल अच्छे गुणों पर विचार किया जाता है। अतः पूरा नीतिशास्त्र मूल्य आधारित है लेकिन सभी मूल्य नीति शास्त्र नहीं है।

तुलना के आधार	नैतिकता	मूल्य
अभिप्राय	नैतिकता एक निर्देशिका है जो नैतिक प्रश्नों को मूल्य वो सिद्धांत और उपाय है जिनके द्वारा प्रारूपित करती है। नैतिकता नियमो की प्रणाली है।	मूल्य वो सिद्धांत और उपाय है जिनके द्वारा महत्त्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लिए जाते है।
संगति	प्रत्येक जगह समानता	लोग तथा स्थनों के अनुसार अलग-अलग होती है।
बताता है	किसी परिस्थिति में नैतिक रूप से क्या उचित है या क्या अनुचित है , यह नैतिकता के द्वारा निर्धारित किया जाता है।	हम क्या करना या प्राप्त करना चाहते हैं?
निर्धारित करता है	हमारे विकल्पों की उचितता या अनुचितता की पहचान करता है।	महत्व के स्टार को बताना कि क्या महत्व पूर्ण है और क्या नहीं।
वे क्या है	नैतिक नियमो की प्रणाली है।	सोच की उत्तेजना है।

मानवीय मूल्य

- मूल्य किसी व्यवित को उसके जीवन में उद्देश्यो एवं लक्ष्यों को प्राप्त करने तलने में सहायता करते है लेकिन केवल उसी विश्वास को मूल्य कहते है जिसमें वांछनीय,अच्छा या सही होने का तत्व उपलब्ध रहता है
- व्यक्ति को जिम्मेदार होने, ईमानदार होने तथा मदद गार होने वाले तथ्य को मूल्य कहते हैं।
- मूल्य व्यक्ति को सही या गलत समझ के निर्धारित करने में मदद करते हैं।
- इसका व्यक्ति के आचरण,व्यक्तित्व तथा कायों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। साथ ही व्यक्ति के सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन के कार्यो में भी योगदान होता है जिससे मानव की सोच , व्यवहार आदि में परिवर्तन होता परिणामस्वरूप जीवन परिष्कृत एवं गरिमा पूर्ण बनता है।

मूल्यों की प्रकृति

- सार्वभोमिकता
- सामाजिक-आदर्श
- रूचि-विहिनता
- यह नैतिक रूप से तटस्थ होता है अर्थात मूल्यों के आधार पर कई नैतिक नियमो को विकसित किया जाता है
- यह अमूर्त होता है अर्थात स्पष्ट नहीं होता
- इसमें शंका, असमंजसता का पक्ष भी देखने को मिलता है

मूल्य की विशेषताएं

- मूल्य सीखे जाते है।
- मूल्य कुछ अंश तक अन्तरिक भाव होते है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करते है।
- नशा, वैश्यावृत्ति आदि गतिविधियों को एक व्यक्ति गलत मानता है, वहीं दुसरे व्यक्ति के लिए ये गतिविधियों मनोरंजन मात्र होती है।
- मूल्य किसी व्यक्ति की तीव्रता को कृम में रखता है तथा उसकी मूल्य पद्धति को बनाता है।
- किसी भी व्यक्ति की मूल्य पद्धति से यह ज्ञात नही किया जा सकता कि कौन से मूल्य को कितना महत्व देता है ।
- जैसे –सुख, आत्मसमान, स्वतंत्रता, समानता एवं ईमानदारी आदि को कितना महत्व देता है।
- मूल्य व्यक्ति के प्रयासो को निर्देशित करते है, कि वे सही, न्यायोचित एवं वांछित है, इससे सम्बंधित मूल्य, विचारो, भावनाओं, रुचियों, द्रष्टिकोण तथा प्राथमिकताओ का प्रतिनिधित्व करते है।
- मूल्य का क्षेत्र विशेष में अंतर होता है, जैसे- पश्चिनी ओद्धोगिक समाजो में व्यक्तिगत उपलब्द्धि की प्रशंसा की जाती है इसलिए व्यक्तिगत उपलब्द्धि को पश्चिमी ओद्योगिक समाज में एक मूल्य मना जाता है।

मूल्यों के प्रकार

द्रष्टियो के आधार पर

- **सकारात्मक मूल्य** जैसे ,अहिंसा ,शांति
- **नकारात्मक मूल्य** जैसे –चोरी

उद्देश्य के आधार पर मूल्य

- **साध्य मूल्य:** अब व्यथित आत्मसम्मान स्वतन्त्रता, सुख एवं पारिवारिक सुरक्षा आदि को अपने जीवनकाल में प्राप्त करना पसंद करता है।
- **साधन मूल्य :** उन सभी वस्तुओ के मूल्यों को साधन मूल्य कहा जाता है, जो अपने आप में शुभ न होकर किसी अन्य वस्तु के साधन के रूप में शुभ होती है ।
- जब व्यक्ति क्षमता,महत्वकांक्षा , उत्तरदायित्व एवं ईमानदारी आदि के माध्यम से साध्य मूल्यो को हासिल करता तो उसे साधन मूल्य कहते है

मूल्यों का वर्गीकरण

- **सामाजिक मूल्य (Social Values):** वह मूल्य व विचार जो हमें साथ में रहने के लिये प्रेरित करें। प्यार, जुड़ाव, लगाव आदि।
- **नैतिक मूल्य (moral value):** वह नीति निर्देश, जो हमें सही रास्ता दिखायें। जैसे- ईमानदारी (Honesty), सहानुभूति (Empathy), सत्यनिष्ठा (Integrity) आदि।
- **धार्मिक मूल्य (Religious Value):** पवित्र धार्मिक पुस्तकों का सम्मान, भगवान से प्रार्थना आदि।
- **राष्ट्रीय मूल्य (National Value):** वह सिद्धांत जो व्यक्ति को राष्ट्रभक्ति व देश की सत्यनिष्ठा के लिये प्रेरित करें। देशभक्ति (Triotisl), राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत का सम्मान आदि।
- **वैज्ञानिक मूल्य (Scientific Value):** तार्किक सोच को विकसित करना
- **नागरिक मूल्य (Civil Value):** इसमें नागरिकों को क्या करना चाहिये व क्या नहीं के बारे में बताया जाता है, बड़ों का सम्मान, कूड़े को कूड़ेदान में डालना आदि।
- **राजनैतिक मूल्य (Political Value**)-समानता, स्वतंत्रता, एकता आदि।
- **आर्थिक मूल्य (Economic Value)** - वैश्वीकरण, निजीकरण आदि।
- **बोद्धिक मूल्य** (Intellectual value)-साहस,प्रेम आदि
- **भावनात्मक मूल्य** –दुःख ,सुख आदि

कार्य क्षेत्र के आधार पर

- **राजनितिक मूल्य** - शपथ ग्रहण करने में, जिन मूल्यो का उल्लेख होता है जैसे :- कल्याण , संविधान का संरक्षण,आदि
- **न्यायिक मूल्य** -न्यायधीशो द्वारा संविधान प्रति
- **सिविल सेवा मूल्य** -सरकारी सेवा प्रति-निष्ठा, राजनीतिक तटस्थता , एकीकरण आदि को सिविल सेवा के मूल्य कहते हैं।
- **व्यवसायिक मूल्य-** चिकित्सकों, अभियन्ताओ, अधिवक्ताओ, पत्रकारो एवं चार्टर्ड एकाउंटेट आदि को नियमित करने वाले पेशेवर मूल्यों को व्यावसायिक मूल्य कहते है । इन मूल्यो को भारत में कानूनी आधार पर स्वीकार किया गया है।
  इन क्षेत्रो में मूल्यो को कानूनो के माध्यम से नैतिक सहिताएं और आचरण संहिता का उपयोग को निर्धारित किया गया है

मूल्य वस्तुनिष्ठ है 'या' आत्मनिष्ठ निष्ठ

- दाशनिकों में मतभेद है कि मूल्य वस्तुनिष्ठ है कि आत्मनिष्ठा
- वस्तुनिष्ठ का अर्थ है कि किसी समाज के सभी सदस्य कुछ मूल्यों को स्वीकार करते है' और उनकी स्वीकृति पर कोई मतभेद नहीं होता है।
- इसके विपरीत मूल्यों के आत्मनिष्ठ होने' का अर्थ है कि विभिन्न व्याप्त मूल्यों के प्रति अलग अलग राय रखते है है
- यदि वस्तुनिष्ठता/ आत्मनिष्ठता का अर्थ शत प्रतिशत या धर्म निरपेक्ष अर्थ में है तो स्वभाविक है कि मूल्य इनमें से किसी वर्ग में नहीं आते ।
- पूर्णत वस्तुनिष्ठ होने का अर्थ है कि समाज का एक भी व्यक्ति समाज के मूल्य संहिता' के विरोध में नहीं है।
- इसके विपरीत पूर्ण आत्म निष्ठता कार्य होगा कि समाज मे' मूल्यों की स्वीकृति को लेकर बिलकुल भी सहमति नहीं है। स्पष्ट है कि किसी भी समाज में व्यावहारिक रूप से ये दोनों विकल्प असंभव है
- सच यह है की सभी मूल्यों में वस्तुनिष्ठता औ र आत्म निष्ठता के तत्त्व साथ साथ पाए जाते है अन्तेर सिर्फ इतना होता है कि जहां कुछ मूल्यों में वस्तुनिष्ठता हावी होती है वहीं कुछ मूल्यों में आत्मनिष्ठता का तत्त्व प्रबल होता है

नैतिकता और जीवन के मूल्य

- नैतिकता का हमारे जीवन में बहुत बड़ा स्थान है
- नैतिकता मूलरूप से नीति से उत्पन्न हुई है। नीति से नीतिक और इसी का अपभ्रंश नैतिक है। नीति से उत्पन्न भाव नैतिकता कहलाते हैं। नीति एक तरह की विचारधारा है जिसके अंतर्गत हमारे सामाजिक ढांचे को मजबूत किया गया है।
- मनुष्य का विकास क्रमिक है। पहले वह जंगलों में रहता था। सामाजिक विकास न के बराबर था। एक छोटा सा कुनबा या कबीला होता था किंतु उनमें भी नैतिकता रहती थी। उस कुनबे में कोई न कोई नियम कायदे कानून होते हैं। उनमें भी नैतिकता रहती थी। मनुष्य के विकास के साथ-साथ

उनका सामाजिक दायरा बढ़ा, सोच बढ़ी जिसके साथ-साथ नैतिकता भी बढ़ी।

- आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक नैतिकता सामाजिक विकास के अनुपातिक क्रम मे बढ़ी। जैसे-जैसे मनुष्य ने आधुनिक काल में प्रवेश किया उसी समय से नैतिकता में गिरावट आनी शुरू हो गई।
- नैतिकता का क्षेत्र विस्तृत है। इसके अंदर वे सभी नियम कानून आ जाते हैं जो किसी भी संस्था को चलाने के लिये आदर्श माने जाते हैं।उपर्युत्तफ़ वाक्य मे आदर्श विशेषण के रूप मे प्रयोग किया गया है।
- यद्यपि बिना नैतिकता के भी संस्थाएं चल सकती हैं किंतु वे आदर्श संस्थाओं का स्थान नहीं ले सकती हैं। उदाहरण के तौर पर हम परिवार नामक संस्था को देखते हैं।
- समाजशास्त्र के विद्वानों ने एक छत के नीचे रहने वाले मां-बाप, पति- पत्नी व बच्चों को परिवार माना है। इस परिवार नामक संस्था में पिता को कर्ता माना गया है। इसके लिये कुछ नियम बनें हैं। परिवार का कर्ता धन उपार्जित करेगा। घर में गृहणी घर का काम काज करेगी।
- घर के आंतरिक कार्यों की जवाबदेही गृहणी की और घर के वाह्य कार्यों की जवाबदेही कर्ता अर्थात घर के मुखिया की निर्धारित की गई।

सार्वजनिक जीवन एवं नैतिक मूल्य

- सार्वजनिक जीवन और नैतिक मूल्य दोनों ही एक-दूसरे पर निर्भर है और परस्पर पूरक भी। सार्वजनिक जीवन मानव समूहों के पारस्परिक संबंधों का द्योतक है।
- अरस्तू का कथन है कि फ्मानव एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज के बिना रह ही नहीं सकता
- सार्वजनिक जीवन को दो रूपों में देख सकते है।
- पहला समाज में रहकर व्यक्ति के रूप में जहां उनकी मांगे भिन्न परस्पर विरोधी और असंख्य हो सकती है, किन्तु उसका सामूहिक स्वरूप समाज कल्याण के सामान्य हित से निर्देशित होता है।
- दूसरे हर वह व्यक्ति या समूह जो जनता की समस्याओं के निदान के लिए क्रियाशील है,सार्वजनिक जीवन से संबंधित है।
- यह क्रियाशीलता राजनीतिक संगठनों के रूप में विधायिकाओं तथा विधायिका से बाहर गैर-सरकारी संगठनों के रूप में भी हो सकती है।
- समाज में रहते हुए मानव एक-दूसरे से सहयोग की अपेक्षा करता है तथा समाज में ही उनकी आवश्यकता की पूर्ति भी होती है।
- प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता मिलकर सामूहिक आवश्यकता का आकार ग्रहण करती है और इसी आवश्यकता की पूर्ति सार्वजनिक जीवन का लक्ष्य होता है।

मूल्य का आशय एवं प्रासंगिकता

- मानव मूल्य का आशय वैसे मूल्यों से है जो मानव की सोच व्यवहार एवं कार्य का मार्गदर्शन कर जीवन को परिष्कृत एवं गरिमापूर्ण बनाते है।
- मनुष्य भय, मैथुन, आहार आदि में पशु के समान है, परंतु मूल्यों के कारण वह मानव कहलाने का अधिकारी बन जाता है। वर्तमान में जीवन के प्रत्येक स्तर एवं प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों का हास हो रहा है।
- आज समाज के रोल-मॉडल बदल रहे है। भ्रष्ट आचरण में लिप्त, धन-बल संपन्न लोग आज सार्वजनिक मंचों पर सम्मान पा रहे है। इन सबका गलत संदेश नई पीढ़ी पर जा रहा है। जिसका दुष्परिणाम समाज और राष्ट्र के साथसाथ सामान्य जन को भुगतना पड़ रहा है।
- आज एक सामान्य आदमी की धारणा है कि मेहनतकश लोगों का शोषण हो रहा है व झूठ और फरेब का बोलबाला है और इसी कारण जनसाधारण के जीवन में नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति आस्था घट रही है आज मूल्य संकट की स्थिति उभरकर सामने आ रही है।
- मूल्य संकट के बारे में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का यह कथन सही प्रतीत होता है कि- पहम यह जानते हैं कि सही क्या है, हम उसकी सराहना करते हैं लेकिन उसे अपनाते नहीं हैं। हम यह भी जानते हैं कि बुरा क्या है, हम उसकी भर्त्सना भी करते हैं फिर भी उसी के पीछे भागते है।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यविहीनता की स्थिति जीवन के सभी क्षेत्र में दिखाई देती है। परिणामस्वरूप नाना प्रकार की समस्याएं जैसे-भ्रष्टाचार लिंगभेद, यौन शोषण एवं उत्पीड़न, जातिभेद, बाल अपराध, धार्मिक वैमनस्य एवं हिंसा, आपराधिक प्रवृत्ति, पर्यावरणीय संकट, आतंकवाद आदि उभरकर सामने आ रहे हैं। इनके समाधान का एक प्रभावशाली उपाय सुशासन की स्थापना करना है।
- सुशासन की स्थापना हेतु शासन (Governance) एवं प्रशासन (Administration) में उच्च मूल्य युक्त नेताओं एवं अधिकारियों का होना तथा जनमानस का अधिकारों के प्रति जागरूक एवं कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है। शासन और प्रशासन का संचालन समाज में पले-बढ़े लोगों द्वारा ही होता है।

मूल्यों को विकसित करने में परिवार की भूमिका

परिवार के माध्यम से निम्न शिक्षाए मिलती है

1. प्रेम
2. शांति
3. व्यापक शिक्षा के मूल्य जैसे –सत्य, सही कार्य, शांति, प्रेम, अहिंसा
4. धार्मिक कार्य

5. सकारात्मक अभिवृत्ति

मूल्य विकसित करने में परिवार की भूमिका

- परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला है। यह बालक के समाजीकरण का प्रथम महत्त्वपूर्ण साधन है जो बालक के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मूल्यों का प्रथम पाठ व्यक्ति परिवार में ही सीखता है।
- परिवार वह प्रारंभिक संस्था है जहां बालक संस्कारों को ग्रहण करता है। यदि परिवार का वातावरण अच्छा है, परिवार में रहने वाले विभिन्न व्यक्तियों में संबंध (प्रेम, सहयोग, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा आदि) सामंजस्यपूर्ण हैं तो बालक के अंदर अच्छे संस्कार विकसित होने लगते हैं और व्यक्तित्त्व निर्माण में भी मदद मिलती है।
- यदि परिवार का वातावरण खराब है तो बालक कुसंस्कारों एवं दुर्गुणों का शिकार होने लगता है।
- अतः यदि माता-पिता का आचरण अनुशासनबद्ध है और उनमें कर्तव्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, सच्चाई, ईमानदारी आदि के गुण हैं तो फिर उसका प्रभाव बच्चे पर भी अवश्य पड़ता है।
- परिवार मूल्यों को बढ़ावा देने एवं मन-मस्तिष्क में बैठाने में निम्न प्रकार से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं

मूल्यों को विकसित करने में शेक्षणिक संस्थानों की भूमिका

- समाज की भूमिका
- समाजी कारण
- साथियों का समूह
- आस पड़ोस
- जाति एवं वर्ग
- भाषा
- नागरिक समाज
- राजनैतिक संस्थाये
- आर्थिक संस्थाए

मूल्यों को विकसित करने में समाज की भूमिका

- समाज नैतिक वातावरण को बनने के लिए प्रयास करता है और सामाजिक आदर्शो को मान्यता देकर
- नैतिक व्यवहार करने में लिये प्रेरित करता है ।
- समाज मनुष्य - एकांगी विचार जैसे भोतिक विकास या आर्थिक विकास को वरीयता नहीं देता है और मनुष्य के पूर्ण विकास अर्थात भोतिक विकास के साथ साथ नैतिक विकास के लिए भी प्रोत्साहन देता है
- समाज में ही परम्परा प्रथा इत्यादि विनियमित होते है, जिससे सामान्यतः इन मूल्यो को हम सीखते रहते है
- समाज में परंपरा प्रथा आदि विनियमित होते है जिससे संभवतः इन मूल्यों को हम सीखते रहते है
- समाज में नैतिक दार्शनिको के बेहतर व्यक्तित्व से कहे किये गए पहलुओ को प्रसारित किया जाता है जैसे महात्मा गाँधी के वचन बुरा मत सुनो ,बुरा मत कहो ,बुरा मत देखो
- समाज में नैतिक आदर्शो के पालन पर मान्यता दिए जाने औ र अनैतिक व्यवहार की आलोचना किये जाने की वजह से मूल्य प्रेरित व्यवहार की गारंटी दिलाता है यह समाज ही है जो मूल्यों को भावना से युक्त करता है औ र मूल्यों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति बनाने में सहायता करता है
- समाज व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जिसमें मनुष्य एक-दूसरे से संबंधित होते हैं और व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कुछ सामाजिक रीतियों, परम्पराओं एवं मान्यताओं से बंधे होते हैं।
- समाज सामाजिक संबंधों का ताना बाना है। ऐसी स्थिति में समाज के सदस्यों के मध्य पाये जाने वाले संबंधों का प्रभाव मानव के मूल्यों पर पड़ता है।
- यदि समाज में सौहार्द्रपूर्ण स्थिति है तो व्यक्ति के अंदर प्रेम, सहानुभूति, त्याग, शांति, भ्रातृत्व, सामाजिक एकता आदि मूल्यों का विकास होगा और यदि संबंधों में कटुता है तो फिर जातिवाद, कट्टरता, बाल-अपराध, ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य आदि दुष्प्रवृत्तियों की प्रबलता दिखाई देगी।
- यह समाज ही है जो मूल्यों को परिभाषित करता है

महान व्यक्तियों के जीवन के मूल्य

महान नेताओ के जीवन से शिक्षा

- समूचे विश्व में कई महान नेता हुए, जिनमें प्रमुख है - महात्मा गांधी, अब्रहमन लिंकन, नेल्सन मंडेला , आंग सांग सू की तथा मदर टेरेसा
  - इनका नैतिक, बोद्धिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियो से **जिन मानवीय मूल्यो पर प्रकाश पड़ता है वे निम्न है**
  - न्याय के प्रति प्रेम और लगाव
  - नि:स्वार्थता
  - मानवता के प्रति आदर
  - प्रत्येक के लिए गरिमा
  - अहिंसा और शांति के पति आस्था
  - परोपकारिता
  - करुना एवं सहानभूति

महान प्रशासको के जीवन से शिक्षा :

जैसे m.s स्वामीनाथन, सेम पित्रोदा, ई श्री धारन, सी.डी. देशमुख, वी.पी. मेनन आदि के मानवीय मूल्य जैसे

- सत्य निष्ठा
- भेद भाव का विरोध
- अनुशसान
- एक नागरिक के रूप में कर्त्तव्य परायणता
- सामाजिक समानता

- कानून के प्रति सम्मान
- नैतिक जबाब देहिता का बोध
- आदर एवं भाई चारा

महान सुधारको के जीवन से शिक्षा

- भारत में कबीर ,गुरु नानक ,राजा राम मोहन राय ,ईश्वर चंद विध्यासगर ,स्वामी विवेकानन्द आदि अनेक समाज सुधारक हुए जिन्होंने समाज में व्याप्त कुप्रथाओ का विरोध किया तथा सामाजिक धार्मिक मुद्दों पर समाज को जगाने का कार्य किया उनकी सूची इस प्रकार है
- मानवता के प्रति आदर
- प्रत्येक की गरिमा का धयान रखना
- मानवतावाद
- तर्क वाद को बढावा देना
- दयालुता ओर करुना को बढावा देना
- आत्म संतोष
- सामाजिक समानता

भारतीय परंपरा में मूल्यों का योगदान

- भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में चार पुरूषार्थों की अवधारणा है। **पुरुषार्थ का अर्थ है- पुरुष या मनुष्य का लक्ष्य।**
- भारतीय नीतिशास्त्र जीवन के चार उद्देश्यों को स्वीकार करता है। ये चार उद्देश्य या पुरुषार्थ हैं- **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।** इनमें मोक्ष सर्वोच्च पुरुषार्थ है। अन्य तीन पुरुषार्थ इस परम लक्ष्य की प्राप्ति के साधन हैं।
- भारतीय संदर्भ में धर्म (Dharma) को शाश्वत, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के रूप में देखा गया है। **यहां धर्म का आशय स्व-कर्त्तव्यापलन एवं सद्-आचरण से है।**
- धर्म में नैतिक मूल्यों के संरक्षण, नियमानुकूल सुखभोग, सामाजिक सदाचार सदगुण एवं कर्तव्य-बोध का भाव निहित है। इसे हम निम्नलिखित बिंदुओं में देख सकते हैं

1. **मनु** ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं। ये हैं- **धैर्य, क्षमा, दान, अस्तेय शुद्धि, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य एवं अक्रोध।**
2. **महाभारत में यह कहा गया है** कि धारणात् धर्मम् इत्याहुः धर्मो धार्यते प्रजाः। अर्थात जो व्यक्ति को, समाज को, जनसाधारण को धारण करे, वही धर्म है।
3. **गीता में कहा गया है कि**- जब-जब धर्म की हानि (मूल्यों का पतन, कर्तव्यों की उपेक्षा होती है और अधर्म (पाप कर्मों में लिप्तता) बढ़ता है तब-तब मैं (अर्थात् ईश्वर) सज्जनों के कल्याणार्थ एवं दुर्जनों के विनाश के लिये अवतरित होता हूं।
4. **वैशेषिक दर्शन में यह कहा गया है** कि जिससे भौतिक कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान दोनों हो, वही धर्म है।
5. **तुलसीदास भी यह कहते हैं** कि परहित सरस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।
6. **आचारः परमो धर्मः** (नैतिक नियमों के अनुसार आचरण करना ही परम धर्म है।), अहिंसा परमो धर्मः (अहिंसा सबसे उत्तम धर्म है), नहि सत्यात् परोधर्मः (सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है) धर्मराज युधिष्ठिर' आदि के संदर्भ भी धर्म के नैतिक एवं मूल्यांकन पक्ष को ही इंगित करते हैं।
7. **गांधी भी धर्मयुक्त राजनीति** की बात करते हैं। उनके अनुसार- धर्मविहीन राजनीति नितान्त निंदनीय है। यहां धर्म का आशय नैतिक मूल्यों से है।

3 CHAPTER

भारत और विश्व के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान

- दर्शन ग्रीक शब्द "दार्शनिक" से व्युत्पन्न जिसका अर्थ है ज्ञान का प्रेम।
- जीवन, मानव अस्तित्व, तर्कसंगतता, ईश्वर, धर्म आदि के बारे में कुछ सबसे बुनियादी सवालों के जवाब देता है।
- एक सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य कारण-प्रभाव संबंधों की तलाश करना चाहता है और उसे उस समाज से सवाल करने के लिए प्रेरित करता है जहां वह रहता है।
- इस प्रकार की पूछताछ और उत्तर की तलाश अंततः सत्य और ज्ञान प्राप्त करती है।
- दार्शनिक = ज्ञान साधक।

भारतीय दार्शनिक

- कौटिल्य
- तिरुवल्लुवर
- गुरुनानाक
- वल्लभाचार्य
- स्वामी विवेकानंद
- श्री अरबिंदो
- महात्मा गांधी
- भीमराव अम्बेडकर

पश्चिमी दार्शनिक

- सुकरात
- प्लेटो
- अरस्तू
- डेकार्ट
- स्पिनोजा
- रूसो
- जॉन लोक
- इम्मैनुएल कांट

भारतीय दर्शन (इंडियन स्कूल ऑफ फिलॉसफी)

- **सांख्य:**
  - **प्रवर्तक** -कपिल
  - **मुख्य विषय** -शारीरिक और मानसिक कष्टों को दूर कर मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- **योग**
  - **प्रवर्तक** -पतंजलि
  - **मुख्य विषय** -त्याग के लिए ध्यान और समाधि का अभ्यास
- **न्याय**
  - **प्रवर्तक** -गौतम:
  - **मुख्य विषय** -ईश्वर की तार्किक खोज और सृष्टि के चरण
- **वैशेषिक**
  - **प्रवर्तक** -कणाद ऋषि
  - **मुख्य विषय** -तर्कशास्त्र और माया की व्यर्थता का विज्ञान
- **मीमांसा**
  - **प्रवर्तक** -जैमिनी
  - **मुख्य विषय** -वेद शाश्वत और दिव्य हैं
- **उत्तर मीमांसा**
  - **प्रवर्तक** -बदरायण
  - **मुख्य विषय** -आत्मा, माया और सृष्टि की दिव्य प्रकृति की व्याख्या करता है

हिन्दू धर्म के प्रमुख लक्षण

- **हिंदू धर्म कभी एक रूप स्थिर और अपरिवर्तनशील धर्म नहीं रहा है। वह अपने को बदलती हुई परिस्थितियों और दशाओं के अनुरूप बनाने में समर्थ रहा है।**
- विविध सिद्धांतों मतों और कर्मकांड के कारण हिंदू धर्म में अनेक संप्रदायों का जन्म हुआ | कालक्रम में इन संप्रदायों ने पूजा की अपनी पद्धतियां विकसित की | परंतु प्रत्येक संप्रदाय अपनी व्यवस्था का अनुसरण करते हुए भी दूसरे के विचारों के प्रति सम्मान पूर्वक दृष्टिकोण रखते हैं।
- अन्य धर्मों की भांति इस धर्म के एक नहीं बल्कि अनेक ग्रंथ हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण वेद माने गए हैं **| वेद चार हैं:ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद** |
- वेद के अलावा **ब्राह्मण, पुराण, उपनिषद और भगवत गीता** भी हिंदू धर्म से संबंधित प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं। हिंदू धर्म में **दो महाकाव्य महाभारत और रामायण** भी श्रेष्ठ माने जाते हैं।
- उपनिषदों के अनुसार जीवन में चार अवस्थाएं होती है जिन्हें आश्रम के नाम से जाना जाता हैं। चार आश्रम हैं: **ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम |**
- चिंतकों ने अलौकिक समस्याओं पर नए सिरे से विवेचना की और **हिंदुओं के षड दर्शन की व्यवस्था सामने आई।** इन छह दर्शनों में सांख्य, न्याय, योग एवं वैशेषिक अपनी रचना में किसी अन्य से प्रभावरहित थे जबकि पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा पर वेदों का प्रभाव था इस काल की एक अन्य बड़ी उपलब्धि थी
- **भगवत गीता** दुनिया को शिक्षा देती है कि **जो कोई भी मेरे पास किसी रास्ते से चलकर आता है मैं उसके पास उसी रास्ते से पहुंचता हूं**

हिंदू धर्म की विशेषताएं इस प्रकार हैं

- ईश्वर की सत्ता में असीम आस्था
- विभिन्न देवी देवताओं की उपासना
- प्रकृति की उपासना में विश्वास
- अवतारवाद की अवधारणा में विश्वास
- आत्मा की अमरता में विश्वास
- वेदों में असीम आस्था
- कर्म में विश्वास
- पुनर्जन्म में विश्वास
- मूर्ति पूजा में विश्वास
- जीवन का प्रमुख लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति

जैन धर्म के सिद्धांत

- **जैन धर्म में संसार को दुखमूलक माना गया है।** मनुष्य जरा (वृद्धावस्था) तथा मृत्यु से ग्रस्त है।
- व्यक्ति को सांसारिक जीवन की तृष्णाएँ घेरे रहती हैं।
- **संसार त्याग तथा सन्यास ही व्यक्ति को सच्चे सुख की ओर ले जा सकता है।**
- **जैन मतानुसार सृष्टिकर्ता ईश्वर नहीं है** किन्तु संसार एक वास्तविक तथ्य है जो अनादि काल से विद्यमान है।
- संसार के **सभी प्राणी अपने-अपने संचित कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में उत्पन्न होते हैं और कर्मफल भोगते हैं।**
- **कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण हैं।**
- जैन धर्म में सांसारिक तृष्णा-बंधन से मुक्ति को '**निर्वाण**' कहा गया है।
- कर्मफल से छुटकारा पाने के लिए त्रिरत्न का अनुशीलन आवश्यक है।

  जैन धर्म के त्रिरत्न हैं- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् आचरण।

इस संबंध में निम्नलिखित पांच महाव्रतों के पालन का विधान है

1. **अहिंसा-** मन, वचन तथा कर्म से किसी के प्रति असंयत व्यवहार हिंसा है। किसी को मारने तथा हानि पहुँचाने का विचार भी हिंसा है।
2. **सत्य वचन-** मनुष्य को सदा सत्य तथा मधुर बोलना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि बिना सोचे-समझे न बोले।
3. **अस्तेय-** बिना अनुमति के किसी की वस्तु न तो ग्रहण करना अपेक्षित है और न उसकी इच्छा ही करनी चाहिए।
4. **अपरिग्रह-** भिक्षुओं के लिए किसी भी प्रकार की संग्रह वृत्ति वर्जित है। धन-धान्य, वस्त्र, आभूषण सभी का त्याग अपेक्षित है।
5. **ब्रह्मचर्य-** महावीर द्वारा जोड़ा गया।

सात तत्त्व

जीव- जैन दर्शन में **आत्मा के लिए "जीव" शब्द का प्रयोग किया गया हैं**। आत्मा द्रव्य जो चैतन्यस्वरुप है।

अजीव- जड़ या की अचेतन द्रव्य को अजीव (**पुद्गल**) कहा जाता है।

आस्रव – पुद्गल कर्मों का आस्रव करना

बन्ध- आत्मा से कर्म बन्धना

संवर- कर्म बन्ध को रोकना

निर्जरा- कर्मों को क्षय करना

मोक्ष – जीवन व मरण के चक्र से मुक्ति को मोक्ष कहते हैं।

- जैन ग्रंथों के अनुसार जीव और अजीव, यह दो मुख्य पदार्थ हैं।
- **आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य, पाप अजीव द्रव्य के भेद हैं।**

चार कषाय

- **क्रोध, मान, माया, लोभ यह चार कषाय है** जिनके कारण कर्मों का आस्रव होता है।

चार गति

- चार गतियाँ जिनमें संसरी जीव का जन्म मरण होता रहता है— **देव गति, मनुष्य गति, तिर्यंच गति, नर्क गति। मोक्ष को पंचम गति भी कहा जाता है।**

बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ तथा सिद्धांत

- बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ हमें पालि में लिखित त्रिपिटक से ज्ञात होती है।

बौद्ध धर्म का मूलाधार 'चार आर्य सत्य' है।

- दुख,
- दुख समुदाय,
- दुख-निरोध तथा
- दुख-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा अर्थात्

अष्टांगिक मार्ग :- बौद्ध धर्म के अनुसार, चौथे आर्य सत्य का आर्य अष्टांग मार्ग है दुःख निरोध पाने का रास्ता। गौतम बुद्ध कहते थे कि चार आर्य सत्य की सत्यता का निश्चय करने के लिए इस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए ।

अष्टांगिक मार्ग

सम्यक दृष्टि :- चार आर्य सत्य में विश्वास करना

सम्यक संकल्प :- मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना

सम्यक वाक : – हानिकारक बातें और झूट न बोलना

सम्यक कर्म :- हानिकारक कर्मों को न करना

सम्यक जीविका :- कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हानिकारक व्यापार न करना

सम्यक प्रयास :- अपने आप सुधरने की कोशिश करना

सम्यक स्मृति :- स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना

सम्यक समाधि : – निर्वाण पाना और स्वयं का गायब होना

बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग के अंतर्गत अधिक सुख पूर्ण जीवन व्यतीत करने को वर्जित किया है। इसे **उन्होंने मध्यम-प्रतिपदा (मध्यम मार्ग) कहा है**

दस शील: शील का तात्पर्य सम्यक आचरण से है, जो निम्नलिखित हैं:

- 1. अहिंसा 2. सत्य 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह 5. ब्रह्मचारी 6. नृत्य-संगीत का त्याग 7. सुगंधित पदार्थों का त्याग 8. असमय भोजन का त्याग 9. कोमल शैय्या का त्याग 10. कामिनी कंचन का त्याग
- बुद्ध की मृत्यु के 8 वर्ष पश्चात् बुद्ध के उपदेशों के संकलन के लिए। इसमें **आनंद ने बुद्ध के वचनों एवं उपदेशो से संबंधित सुत्तपिटक को संकलित किया**
- **उपाली ने भिक्षुओं के लिए नियमावली विनयपिटक का** तथा **महाकश्यप ने दार्शनिक पक्षों से संबंधित अभिधम्मपिटक का संकलन पाठ किया।** इसका आयोजन सप्तपर्णि गुफा में किया गया था।
- **बौद्ध धर्म महासंघिक और स्थविर में विभाजित हो गया।** इसमें बौद्ध धर्म के स्थविर संप्रदाय को मान्यता दी गई। अभिधम्म पिटक से संबंधित ग्रंथ कथावत्थु का संकलन मोगलिपुत्त तिस्स ने किया।
- इसके दौरान बौद्ध धर्म महायान और हीनयान में विभाजित हो गया।
- **हीनयान ने त्रिपिटक को अपना आधार ग्रंथ माना और इससे संबंधित विभाषाशास्त्र का संकलन वसुमित्र ने किया।** जबकि बौद्ध धर्म में परिवर्तन के आकांक्षी महायानियों ने बुद्ध की मूर्तिरूप में पूजा आरंभ कर दी और बड़ी मात्रा में बौद्ध ग्रंथों की रचना की जिसे उनकी विपुलता के आधार पर वैपुल्य सूत्र कहा गया। आगे चलकर महायान में माध्यमिक और योगाचार तथा हीनयान में वैभाषिक और सौत्रान्तिक नामक नए संप्रदाय बने।

बौद्ध धर्म में मानवीय मूल्य

'कर्म' में विश्वास

- मनुष्य को 'कर्म' सिद्धांत में विश्वास करना चाहिए।

बीमारों की सेवा करें

- उनके अनुसार बीमारों की सेवा करने का अर्थ ईश्वर की सेवा करना है।

नैतिकता

- वह ईसाई धर्म के दो सुनहरे नियमों यानी समानता के सिद्धांत और पारस्परिकता के सिद्धांत में विश्वास करते थे। इसका मतलब है कि हमें उसी तरह व्यवहार करना चाहिए या कार्य करना चाहिए, जिसकी हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं। बुद्ध के अनुसार सभी मनुष्य समान हैं और हमें अच्छे इंसान होने के नाते नैतिक और नैतिक मूल्यों का पालन करना चाहिए।

मानसिक विकास

- यही एकमात्र मार्ग है जो हमारे मन को मजबूत और नियंत्रित कर सकता है। एकाग्रता और ध्यान से मानसिक विकास संभव है। यह अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और आचरण को बनाए रखने में मदद करेगा।

प्रेम

- बुद्ध के अनुसार घृणा का अंत प्रेम और करुणा करना है। हम दूसरों के प्रति प्रेम और स्नेह से क्रोध पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सद्भाव

- उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने के लिए ब्रह्मांड में सभी जीवित और निर्जीव चीजों के बीच संतुलन और सद्भाव बनाए रखने का प्रयास किया।

शांति का प्रसार

- बुद्ध के इसी उद्देश्य को स्वीकार करके मानव समाज शांतिपूर्ण हो सकता है। अहिंसा, समान रूप से भाईचारे और मित्रता के अभ्यास से शांति प्राप्त की जा सकती है।

आत्म-बलिदान –

- आत्मशक्ति, एकता और आत्मनिर्भरता से मानव समाज और राष्ट्र का विकास किया जा सकता है। हथियारों की ताकत से सुनिश्चित एकता लंबे समय तक नहीं रहती है। सच्ची एकता शिष्टाचार और आत्म-बलिदान में निहित है।

धैर्य और शांति

- अशांति, निराशा आदि जैसी विभिन्न बाधाओं का सामना करते हुए शांत और स्पष्ट होने की क्षमता होनी चाहिए। मनुष्य में उस समय शांत रहने और क्रोध से दूर रहने की क्षमता होनी चाहिए जब अन्य लोग उन्हें नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते हैं। उचित धैर्य के साथ, सभी अप्रिय स्थितियों को नियंत्रित करना आसान है।

दृढ़ता

- यह हमारी सारी ऊर्जा को उत्पादक और रचनात्मक उद्देश्य में उपयोग करने की क्षमता है जिससे सभी मानव जाति को लाभ हो सकता है।

आत्म-विश्लेषण

- आत्म-सुधार के लिए आत्म-विश्लेषण और आत्म-निरीक्षण आवश्यक है। हमारे जीवन के हर दिन में खुद को बेहतर बनाने के लिए थोड़े से अभ्यास की जरूरत होती है। सही अभ्यास हमारी आदत बन जाएगा जो अंततः हमारे चरित्र का हिस्सा बन जाता है।

जैन धर्म में मानवीय मूल्य

अहिंसा

- किसी को शारीरिक रूप से मारना या नुकसान पहुँचाना, दोनों को जैनियों द्वारा सख्ती से त्याग दिया जाता है। अहिंसा